मराठा शक्ति के उत्कर्ष के कारण एवं परिस्थितियाँ

17वीं सदी में दक्कन में एक शक्तिशाली मराठा आन्दोलन का विकास हुआ, जिसकी परिणति एक पृथक मराठा राज्य की स्थापना के रूप में हुई। एक पृथक राजनीतिक शक्ति के रूप में मराठों के उत्कर्ष का भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न भिन्न रूप से व्याख्या की है। इनमें सबसे लम्बे समय से तथा सबसे लोकप्रिय सिद्धान्त मराठा उत्कर्ष को औरंगजेब की धार्मिक नीति से जोड़कर देखता है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक राजनीतिक शक्ति के रूप में मराठों का उत्कर्ष औरंगजेब की साम्प्रदायिक नीति के खिलाफ हिन्दू प्रतिक्रिया का परिणाम थी।

किंतु उपलब्ध तथ्यों एवं तर्कों के आलोक में उपरोक्त विचार को स्वीकारना कठिन है। उल्लेखनीय है कि दक्कन में मराठा उत्कर्ष की प्रक्रिया पहले शाहजी और फिर शिवाजी के नेतृत्व में तब शुरू हुई थी जब शाहजहाँ मुगल बादशाह था और शाहजहाँ इस दौर में दारा एवं जहाँआरा के प्रभाव में पहले की तुलना में काफी उदारवादी हो गया था। यह भी ध्यातव्य है कि आरंभ में मराठों का संघर्ष बीजापुर के खिलाफ था न कि मुगलों के खिलाफ। इस संदर्भ में यह भी स्पष्ट है कि इस दौरान अनेक मराठा सरदार दक्कनी रियासतों की सेवा में शामिल थे। स्वयं शाहजी का आरंभिक राजनीतिक उत्कर्ष मलिक अम्बर की सेवा में हुआ था। यह भी गौरतलब है कि महाराष्ट्र के बाहर शिवाजी ने कभी भी हिन्दुओं के हित की लड़ाई नहीं लड़ी और न ही हिन्दू समाज में सुधार लाने का कोई सार्थक प्रयास किया। यह सही है कि राज्याभिषेक के समय शिवाजी ने हिन्दू धर्मोद्धारक की उपाधि धारण किया, ब्राह्मण एवं गौ की रक्षा करने तथा हिन्दू धर्म को प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया किंतु तब यह कोई विशिष्ट बात नहीं थी। अनेकानेक हिन्दू शासक परंपरा वश ऐसा करते थे। सच तो यह है कि इस दौर के अन्य महत्वाकांक्षी एवं साहसी योद्धाओं की तरह शाहजी एवं शिवाजी ने भी अपने लिये राजनीतिक वैधता पाने का प्रयत्न किया और इसके

लिये तत्कालीन परिस्थितियों का भरपूर लाभ उठाया।

कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार मराठाशक्ति का उत्कर्ष मराठवाड़ा क्षेत्र में मुगलों की विदेशी हुकूमत के खिलाफ एक राष्ट्रीय प्रतिक्रिया का प्रतिफल था। अर्थात मराठों का उत्कर्ष मराठा राष्ट्रवाद की अभिव्यक्ति थी किंतु इस विचार को इस आधार पर चुनौती दिया गया है कि अगर मुगल विदेशी थे तो बीजापुर एवं गोलकुंडा भी कुछ कम विदेशी नहीं थे। मराठों को उनकी अधीनता स्वीकारने में कोई दिक्कत नहीं हुई तो फिर मुगलों से क्यों? यह भी ध्यातव्य है कि राष्ट्रवाद एक आधुनिक अवधारणा है और इसका सीधा सम्बन्ध मध्यम वर्ग से होता है किंतु तत्कालीन मराठा समाज में न तो मध्यम वर्ग का विकास हुआ था और न ही कोई राष्ट्रवादी चेतना का।

इतिहासकार आन्द्रे विक ने मराठा उत्कर्ष की व्याख्या बिल्कुल नये ढंग से एवं काफी रोचक रूप से किया है। उनकी राय में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा राज्य की स्थापना एक फितना थी। किंतु कई विद्वानों जैसे इरफान हबीब, मुजफ्फर आलम आदि ने आंद्रे विक के इस विचार से अपनी असहमति दिखायी है। हबिब कहते हैं कि अरब विद्वान इब्न खलदून ने फितना शब्द का प्रयोग नकारात्मक अर्थ में किया था। खिलाफत के आदर्शों से विमुख होकर मुल्कों (देश) के उत्कर्ष को फितना कहा। परंतु विक इसका प्रयोग मराठों द्वारा मुगल आदर्शों के विरोध के रूप में करते हैं जो सरासर गलत है।

कुछ विद्वान मराठों के उत्कर्ष में वहाँ की भौगोलिक परिस्थिति को प्रमुख कारक मानते हैं। उनकी राय में मराठवाड़ा क्षेत्र की खड़-खाबड़ भूमि, कृषि योग्य भूमि का अभाव, जीवन यापन की कठोर परिस्थितियाँ आदि ने वहाँ के लोगों को परिश्रमी, संघर्षशील एवं लड़ाकू चरित्र दिया। इसके साथ ही उन्हें एक पृथक पहचान भी दिया। आगे चलकर उनमें अपनी पृथक पहचान की चेतना और अधिक मजबूत

classmate
Date
Page

बूत हुई तथा इसने मराठा आन्दोलन को आधार प्रदान किया। इसी तरह कुछ लोग मराठा उत्कर्ष में शाहजी एवं शिवाजी के योगदान को भी महत्वपूर्ण कारक मानते हैं। यह सही है कि मराठा शक्ति के उत्कर्ष में एक तरफ यहाँ की भौगोलिक वातावरण एवं जलवायु ने तो दूसरी तरफ शाहजी एवं शिवाजी जैसे कुशल योद्धाओं के नेतृत्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। किंतु मराठा उत्कर्ष की कोई भी सम्यक व्याख्या यहाँ की तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के मूल्यांकन के बिना अधूरी है।

जिस समय दक्कन में मराठा आन्दोलन आरंभ हुआ था उस समय यहाँ के राजनीतिक हालात काफी उथल पुथल से भरे थे। अहमदनगर का पतन हो चुका था किंतु दक्कन में मुगल प्रसार की गति काफी धीमी थी। ऐसे में इस क्षेत्र में एक राजनीतिक शून्यता की स्थिति उत्पन्न हुई। नतीजतन इस समय के अनेक महत्वाकांक्षी सरदार अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा को पूरा करने के लिये इसकी ओर आकर्षित हुये। पहले शाहजी और फिर शिवाजी के नेतृत्व में इस क्षेत्र में मराठों की जो गतिविधियाँ हुई उन्हें इसी संदर्भ में देखा जा सकता है।

किंतु सिर्फ इस प्रकार की राजनीतिक परिस्थिति के कारण शिवाजी एक सशक्त मराठा आन्दोलन संगठित करने में कामयाब नहीं होते। यहाँ की परिस्थितियों ने शिवाजी को भरपूर सहयोग दिया। वास्तव में देखा जाये तो शिवाजी की सफलता का राज इस इलाके के किसानों को संगठित करने में था। उन्होंने महाराष्ट्र के बड़े-बड़े देशमुखों की ताकत पर अंकुश लगाया, दक्कन में व्याप्त भ्रष्ट एवं शोषणकारी प्रथाओं को नष्ट किया तथा कृषि के विस्तार एवं विकास पर बल दिया। उन्होंने देशमुखों की सैनिक ताकत पर भी अंकुश लगाया। स्पष्टतः इन सारे कार्यों का प्रत्यक्ष लाभ यहाँ के छोटे-छोटे ग्रामपतियों अर्थात् वतनदारों को मिला। दरअसल यही शिवाजी के शक्ति के मुख्य स्रोत थे। इस संदर्भ में

यह भी उल्लेखनीय है कि उस समय वतनदारों के बीच भूमि पर नियंत्रण के लिए खूनी संघर्ष चल रहा था, क्योंकि भूमि पर नियंत्रण ही राजनीतिक एवं सामाजिक हैसियत का जरिया था। शिवाजी ने ~~वतनदारों~~ वतनदारों की इस तीव्र आकांक्षा का भरपूर लाभ उठाया। इसी तरह महाराष्ट्र क्षेत्र में शोषित पीड़ित कृषक समुदाय के बीच एक जबर्दस्त सत्ता विरोधी चेतना थी। उल्लेखनीय है कि मुगलों की प्रशासनिक अव्यवस्था एवं जागीरदारी संकट के कारण दक्कन में किसानों का काफी शोषण एवं उत्पीड़न हो रहा था जिससे किसानों में उत्तरोत्तर विद्रोही चेतना का निर्माण हो रहा था। शिवाजी ने इसका भी भरपूर लाभ उठाया।

मराठा आन्दोलन का एक सामाजिक पहलू भी था। उस समय वहाँ की कई निम्न जातियों कोली, कुनबी आदि में सामाजिक सोपान में ऊपर उठने की जबर्दस्त प्रक्रिया चल रही थी। शिवाजी के नेतृत्व में शामिल होकर कुनबी एवं कोली किसान मराठा बनकर सामाजिक सोपान में अपना स्थान ऊँचा कर सके। इस संदर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि स्वयं शिवाजी ने भी सिर्के, मोरे, निम्बालकर आदि जैसे प्रमुख देशमुख घरानों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित कर सामाजिक सोपान में अपना स्थान ऊपर करने का काम कर चुके थे।

इस प्रकार दक्कन में मराठा आन्दोलन महज एक राजनीतिक आन्दोलन नहीं था बल्कि उस समय ~~चल रहे~~ मराठा समाज में चल रहे एक महान आन्दोलन का प्रतिफल था जिसके कई महत्वपूर्ण तत्व थे जैसे वतनदारों के बीच भूमि पाने की लालसा, किसानों में विद्रोही चेतना, कई निम्न जातियों में सामाजिक सोपान में ऊपर उठने की आकांक्षा आदि। इस तरह यह स्पष्ट है कि विभिन्न कारणों से मराठवाड़ा क्षेत्र में एक विशिष्ट परिस्थिति बनी जिसमें शिवाजी के नेतृत्व में मराठा आन्दोलन का विकास हुआ। इस मराठा आन्दोलन को बौद्धिक एवं वैचारिक आधार देने का काम किया। उस क्षेत्र में अनेक भक्ति संतों के नेतृत्व में चल रहे भक्ति आन्दोलन की मराठा

उत्कर्ष में भूमिका को काफी बढ़ा चढ़ाकर आँका गया है। कई विद्वानों ने तो इसे एक धार्मिक क्रांति से उत्पन्न राजनीतिक की संज्ञा दी है। उनके अनुसार महाराष्ट्र क्षेत्र में पहले एक धार्मिक आन्दोलन विकसित हुआ जिसने उस पूरे क्षेत्र को भाषा, धर्म, जाति, साहित्य आदि स्तर पर एकजुट कर दिया। स्पष्टतः वहाँ के भक्ति संतों की इसमें काफी महत्वपूर्ण भूमिका थी। किंतु मराठा आन्दोलन एवं भक्ति संतों की भूमिका में प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित करना कठिन है। वास्तव में देखा जाये तो भक्ति आन्दोलन का सम्बन्ध हिन्दू रूढ़िवादिता से था न कि वह इस्लाम के खिलाफ कोई चुनौती था। यह सही है कि भक्ति संतों ने मराठा समाज के विभिन्न तबकों के बीच एकता एवं समता की बात कर मराठा आन्दोलन के लिये अनुकूल पृष्ठभूमि बनाने का काम किया। किंतु दोनों में न तो कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता और न ही महाराष्ट्र धर्म को मराठा आन्दोलन का जनक माना जा सकता।

कुल मिलाकर मराठा उत्कर्ष में कई तत्वों की भूमिका थी यथा मुगलों के खिलाफ कृषक असंतोष, जनसामान्य में अपनी सामाजिक हैसियत बेहतर बनाने की आकांक्षा, वतनदारों में व्याप्त आर्थिक राजनीतिक महत्वाकांक्षायें आदि। साथ ही मुगल केन्द्रीकरण के विरुद्ध स्थानीय स्वायत्तता का आग्रह, मुगल साम्राज्य का ह्रासोन्मुख होना, वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ, शिवाजी का कुशल नेतृत्व ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसमें महाराष्ट्र धर्म ने एक मनोवैज्ञानिक औषधि का काम किया जिसकी मदद से मराठा वतनदारों के लिये बहुसंख्यक किसानों को लामबंद करना आसान हो गया।

P.S